दलदल में उपजते मोती

नवनीत कुमार गुप्ता

नमभूमियां प्रकृति का एक अनोखा और अनुपम रूप है। नमभूमियों के अंतर्गत झीलें, तालाब, दलदली क्षेत्र, हौज़, कुण्ड, पोखर एवं तटीय क्षेत्रों पर स्थित मुहाने, लगून, खाड़ी, ज्वारीय क्षेत्र, प्रवाल क्षेत्र, मैंग्रोव वन आदि शामिल होते हैं। गुजरात का नलसरोवर, उड़ीसा की चिल्का झील और भितरकनिका मैंग्रोव वन क्षेत्र, राजस्थान का केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, दिल्ली का ओखला पक्षी अभयारण्य नमभूमियों के कुछ उदाहरण हैं।

नमभूमियां भारत के कुल क्षेत्रफल के 4.63 प्रतिशत (15,26,000 वर्ग कि.मी.) पर फैली हुई हैं। इनके अलावा 2.25 वर्ग कि.मी. से कम आकार वाली करीब 5,55,557 छोटी नमभूमियां चिन्हित की गई हैं। कुल नमभूमियों में से 69.22 प्रतिशत क्षेत्र आंतरिक नमभूमि क्षेत्र है जबकि तटीय नमभूमियों का प्रतिशत 27.13 है।

नमभूमियां हमारे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। नमभूमि की मिट्टी झील, नदी, विशाल तालाब या किसी नमीदार क्षेत्र का हिस्सा होती है जहां भरपूर नमी पाई जाती है। इसके कई लाभ हैं। भूजल स्तर बढ़ाने के अलावा जल को प्रदूषण मुक्त रखने में भी नमभूमियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

नमभूमियां प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाती है। नमभूमि भंडारण का काम करती है जिससे बाढ़ जैसी विपदा में कमी आती है। सूखे मौसम में यह पानी को सहेजे रखती है, तो बाढ़ के दौरान पानी का स्तर कम बनाए रखने में सहायक होती हैं। इसके अलावा ऐसे समय में नमभूमि पानी में मौजूद तलछट और पोषक तत्त्वों को अपने में समा लेती है और सीधे नदी में जाने से रोकती हैं। इस प्रकार झील, तालाब या नदी के पानी की गुणवत्ता बनी रहती है। नमभूमियां समुद्री तूफान और आंधी के प्रभाव को सहन करने की क्षमता रखती हैं। समुद्र से होने वाले कटाव से तट की रक्षा करके तटरेखा को स्थिर बनाए रखने में भी नमभूमियों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

नमभूमियों का कार्बन चक्र में विशेष महत्त्व है। वैसे तो नमभूमियां केवल 3-4 प्रतिशत क्षेत्र पर फैली हैं लेकिन ये कार्बन की 25-30 प्रतिशत मात्रा का अवशोषण करती हैं। नमभूमि जैव विविधता संरक्षण के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। ये बहुत सारे विलुप्तप्राय जीव जैसे संगाई हिरण, मच्छीमार बिल्ली, गैंडा, डूरोंग, एशियाई जलीय भैंस आदि के आवास हैं। नमभूमियां शीतकालीन पक्षियों और विभिन्न जीव-जंतुओं का आश्रय स्थल हैं। तरह-तरह की मछलियों और जंतुओं के प्रजनन के लिए भी ये उपयुक्त होती हैं। नमभूमि के आसपास प्रवासी पक्षी हज़ारों किलोमीटर की यात्रा कर एक देश से दूसरे देश पहुंचते हैं। हमारा देश राजहंस, पनकौआ, बायर्स वॉचार्ड, ओस्बे, इंडियन स्किमर, बगुला, संगमरमरी टील, बंगाली फ्लोरीकन आदि पक्षियों का मनपसंद प्रवास स्थल है।

नमभूमियां अपने आसपास बसी मानव बस्तियों के लिए जलावन, फल, वनस्पतियों, पौष्टिक चारे और जड़ी-बूटियों का स्रोत होती हैं। इस प्रकार, नमभूमियों का आर्थिक महत्त्व भी है।

नमभूमियां अर्थ व्यवस्था, समाज व संस्कृति का आधार रही हैं। इसीलिए 2 फरवरी 1971 के दिन नमभूमियों के संरक्षण के लिए ईरान के रामसर शहर में एक अंतर्राष्ट्रीय संधि हुई थी जिसे रामसर संधि भी कहा जाता है। यह संधि विश्व की दुर्लभ व महत्त्वपूर्ण नमभूमियों को रामसर स्थल के रूप में चिन्हित करने के साथ ही नमभूमियों के संरक्षण के लिए जागरूकता का प्रसार करती हैं। हर वर्ष 2 फरवरी विश्व नमभूमि दिवस के रूप में मनाया जाता है।

अभी तक विश्व भर की करीब उन्नीस करोड़ अठारह लाख हैक्टर पर फैली 1994 नमभूमियों को रामसर स्थलों के रूप में चिन्हित किया गया है। इनमें से 35 प्रतिशत क्षेत्रों में इको-पर्यटन को बढ़ावा देने और टिकाऊ विकास के लिए इस वर्ष नमभूमि दिवस की थीम 'नमभूमि और पर्यटन'

रखी गई है।

वैसे हमारे देश में भी नमभूमि पर्यटन पर ध्यान दिया जा रहा है। जिसके तहत गुजरात राज्य में पिछले तीन सालों से 'ग्लोबल बर्ड वॉचर्स कांफ्रेंस' आयोजित की जाती है। ऐसे आयोजनों का उद्देश्य यही होता है कि इन नमभूमियों को बढ़ते प्रदूषण, बदलती जलवायु और अनियंत्रित विकास से उत्पन्न खतरों से बचाया जा सके ताकि इन क्षेत्रों में जीवन के विविध रूप हमेशा मुस्कराते रहें। ***(स्रोत फीचर्स)***